पाठ - वीर कुँवर सिंह

शब्दार्थ –

1. व्यापक – विस्तृत , चारों ओर फैला हुआ
2. सशस्त्र – शस्त्रों के साथ
3. विद्रोह – बगावत, राजद्रोह, क्रांति
4. दमन – नाश, शमन, निरोध , नियंत्रण
5. कूच – किसी स्थान के लिए किया जाने वाला प्रस्थान , रवानगी, यात्रा की शुरुआत
6. तैनात – किसी काम पर लगाया या नियत किया हुआ , मुकर्रर , नियत , नियुक्त
7. घोषित – जिसकी घोषणा की गई हो
8. विस्तृत – फैला हुआ , विशाल , लंबा – चौड़ा , खुला हुआ
9. अत्यधिक – प्रचुर , ज़रूरत से ज़्यादा , बहुत ही अधिक
10. भीषण – डरावना , भयानक , बहुत बुरा , विकट , उग्र व दुष्ट स्वभाव वाला
11. दृढ़ – पुष्ट , सबल , मज़बूत , पक्का , प्रगाढ़ , अटूट , अडिग , स्थायी
12. नींव – किसी भवन की दीवार का वह निचला हिस्सा जो ज़मीन के नीचे रहता है , मूल , जड़ , आधार , किसी रचनात्मक कार्य का आरंभ
13. सांप्रदायिक – संप्रदाय संबंधी (कम्यूनल) , किसी संप्रदाय का
14. सद्भाव – शुभ और अच्छा भाव , हित की भावना , मेल – जोल , द्वेष आदि से रहित भाव या विचार
15. वयोवृद्ध – अत्यधिक उम्रवाला , बूढ़ा
16. स्वाभिमानी – वह व्यक्ति जिसे अपनी प्रतिष्ठा का गौरव या अभिमान हो , ख़ुद्दार , अपनी इज़्ज़त का ख़याल रखने वाला , स्वाभिमानवाला
17. उदार – विशाल ह्रदयवाला , दयालु , दानशील , भला , दूसरों में गुण देखने वाला
18. व्यक्तित्व – अलग सत्ता , पृथक अस्तित्व , निजी विशेषता , वैशिष्ट्य
19. चरम सीमा – किसी बात या कार्य की अंतिम अवस्था , चरम अवस्था , पराकाष्ठा , हद
20. असंतोष – नाख़ुशी , नाराज़गी , अप्रसन्नता , अतृप्ति
21. रजवाड़ा – देसी रियासत , राजाओं के रहने का स्थान , रियासत का मालिक , राजा
22. राजदरबार – राजा का दरबार , राजओं का सभागृह **(राजदरबार-तत्पुरुष समास)**
23. वंचित – जिसे वांछित (इच्छित) वस्तु प्राप्त न हुई हो या प्राप्त करने से रोका गया हो, महरूम, रहित, विमुख
24. देशव्यापी – पूरे देश में व्याप्त , सारे देश में फैला हुआ , जो देश भर में मिलता हो , बहुत विस्तृत
25. लोहा लेना – मुकाबला करना

egyanarchive

26.संकल्प – दृढ़ निश्चय , प्रतिज्ञा , इरादा , विचार , कोई कार्य करने की दृढ इच्छा या निश्चय

27.सिद्ध – जिसकी साधना पूरी हो चुकी हो , संपन्न ,,ज्ञानी , पूर्ण योगी , संत , महात्मा

28.सक्रिय – जो कोई क्रिया कर रहा हो , क्रियाशील , कर्मठ

29.गुप्त – छिपा या छिपाया हुआ , अदृश्य , जिसके संबंध में लोग परिचित न हों

30.विख्यात – जिसकी बहुत ख्याति हो , प्रसिद्ध , मशहूर

31.ऐतिहासिक – इतिहास में उल्लिखित , इतिहास संबंधी , कोई बहुत महत्वपूर्ण तथा स्मरणीय घटना

32.स्वाधीनता – स्वतंत्रता , आज़ादी

33.एकत्र – एक स्थान पर जमा , इकट्ठा , एक जगह संगृहीत

34.संपर्क – संयोग , मेल , वास्ता , संगति

35.मुक्तिवाहिनी – गुलामी की बेड़ियों से मुक्त होने के लिए किए गए आंदोलन का नाम

36.बागी – बगावत करने वाला , विद्रोही , न दबने वाला , अवज्ञाकारी , उपेक्षाकारी

37.जयघोष – ज़ोर से कही जाने वाली किसी की जय , जय ध्वनि , विजय का ढिंढोरा

38.सलाखें – जेल में लोहे के डंडे

39.तत्पर – किसी कार्य को लगन और निष्ठा के साथ करने वाला , तल्लीन , उद्यत , आज्ञाकारी , आतुर , उत्साही , इच्छुक

40.ज्वाला – आग की लपट या लौ , अग्निशिखा

41.सर्वत्र – सब स्थानों पर , सब जगह , हर तरफ़ , पूर्ण रूप से

42.व्याप्त – फैला हुआ , समाया हुआ , सब ओर से आच्छादित या ढका हुआ

43.आधुनिक – वर्तमान समय या युग का , समकालीन

44.शस्त्र – हथियार , आयुध , औज़ार , युद्ध के समय लड़ाई का उपकरण (ऐसे हथियार जिनका प्रयोग दुश्मन पर फेंक कर किया जाय उन्हें अस्त्र कहा जाता है जबकि उन हथियारों को जिन्हे हाथ में पकड़ कर दुश्मन पर वार किया जाता है उन्हें शस्त्र कहा जाता है।)

45.पतन – ऊपर से नीचे आने या गिरने का भाव या क्रिया , मरण , संहार , नाश , घटाव

46.परास्त – पराजित , हारा हुआ या हराया हुआ , दबा हुआ , झुका हुआ , विनष्ट , ध्वस्त

47.आत्मबल – आत्मा या मन का बल , आत्मिक शक्ति **(आत्मबल - तत्पुरुष समास)**

48.भावी – भविष्य में होने वाली बात , भविष्यत , आगामी , भविष्यकालीन

49.संग्राम – घमासान युद्ध , लड़ाई , रण

50.संचालक – किसी बड़े कार्य (कार्यालय , संस्था , कारख़ाने आदि) के सभी काम देखने , करने या कराने वाला व्यक्ति , (डाइरेक्टर)

51.प्रस्थान – किसी स्थान से दूसरे स्थान को जाना , चलना , गमन , सेना का युद्धक्षेत्र की ओर जाना , कूच , मार्ग , रास्ता

egyanarchive

52.कीर्ति – ख्याति , बड़ाई , यश , प्रसिद्धि , नेकनामी , शोहरत

53.अधीनता – आश्रय, मातहती , परवशता , विवशता , दीनता , लाचारी, नेतृत्व

54.सैन्य – सेना का , सेना से संबंधित

55.रणनीति – युद्ध संबंधी नीति नियम , युद्ध कौशल , योजना , कूटनीति , उपाय , युक्ति

56.विजय पताका – जीत का परचम

57.सेनानी – सेनापति , सिपहसलार , सेना का नायक

58.कुशल – जो किसी काम को करने में दक्ष हो , जो किसी काम को श्रेष्ठ तरीके से करता हो , प्रशिक्षित , योग्य

59.छापामार – अचानक या एकाएक किसी पर आक्रमण करना

60.महारत – निपुणता , दक्षता , योग्यता , अभ्यास , हस्तकौशल

61.पूर्णतः – पूर्ण रूप से , अच्छी तरह , सम्यक

62.असमर्थ – अक्षम , अशक्त , दुर्बल , अपेक्षित शक्ति या योग्यता न रखने वाला

63.अंकित – चिह्नित , लिखित , चित्रित , मुद्रित , उत्कीर्ण , खुदा हुआ

64.प्रचलित – जिसका प्रचलन हो , जो उपयोग या व्यवहार में आ रहा हो

65.निरंतर – सदा , हमेशा , लगातार , बिना किसी अंतराल के

66.अफवाह – गलत ख़बर

67.भावपूर्ण – भावों से युक्त भावनात्मक , भावनापूर्ण , भावनामय , भावप्रधान

68.ओजस्वी – जिसमें ओज हो , शक्तिशाली , तेजस्वी , प्रभावशाली , जोश पैदा करने वाला

69.अकिंचन – जिसके पास कुछ न हो, अतिनिर्धन , दरिद्र , कंगाल , मामूली

70.पूर्ति – पूरा करने की क्रिया , पूर्णता , तृप्ति , संतुष्टि , आवश्यकता को पूर्ण करने का भाव , कमी पूरा करना

71.जलाशय – वह स्थान जहां बहुत सारा पानी एकत्र हो , तालाब , झील , वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए बनाया गया बड़ा गड्ढा

72.संवेदनशील – संवेदना से युक्त , भावुक , सहृदय , भावप्रधान

73.मकतब – इस्लाम धर्म की शिक्षा – दीक्षा की पाठशाला , छोटे बच्चों का मदरसा या पाठशाला

74.लोकप्रियता – लोगो में प्रिय

75.लोकभाषा – बोली , लोगो की आम बोलचाल की भाषा

76.प्रशस्ति – प्रशंसा , तारीफ़ , बड़ाई , किसी की प्रशंसा में लिखी गई कविता आदि

egyanarchive

व्याख्या –

इस स्वतंत्रता – महायज्ञ में कई वीरवर आए काम ,
नाना धुंधूपंत , ताँतिया , चतुर अशीमुल्ला सरनाम।
अहमद शाह मौलवी , ठाकुर कुँवर सिंह सैनिक अभिराम ,
भारत के इतिहास – गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम ।।

व्याख्या -

इस पद में हमारे स्वतंत्रता संग्राम में लड़ने और शहीद होने वाले कई बड़े वीरों का उल्लेख किया गया है। नाना धुंधूपंत , ताँतिया , चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम , अहमद शाह मौलवी , ठाकुर कुँवर सिंह तथा सैनिक अभिराम आदि ऐसे ही वीर और साहसी क्रांतिकारी थे , जिन्होंने युद्ध में दुश्मनों से जमकर संघर्ष किया था और इन वीर योद्धाओं के नाम भारत के इतिहास में हमेशा अमर रहने वाले हैं।

विशेष - यहाँ स्वतंत्रता संग्राम के उसी वीर कुँवर सिंह के बारे में जानकारी दी जा रही है। सन् 1857 के व्यापक सशस्त्र – विद्रोह ने भारत में ब्रिटिश शासन की जड़ों को हिला दिया। भारत में ब्रिटिश शासन ने जिस दमन नीति को आरंभ किया उसके विरुद्ध विद्रोह शुरू हो गया था। मार्च 1857 में बैरकपुर में अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने पर मंगल पांडे को 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई। 10 मई 1857 को मेरठ में भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध आंदोलन किया और सीधे दिल्ली की ओर कूच कर गए। दिल्ली में तैनात सैनिकों के साथ मिलकर 11 मई को उन्होंने दिल्ली पर कब्जा कर लिया और अंतिम मुगल शासक बहादुरशाह ज़फ़र को भारत का शासक घोषित कर दिया। यह विद्रोह जंगल की आग की भाँति दूर – दूर तक फैल गया। कई महीनों तक उत्तरी और मध्य भारत के विस्तृत भूभाग पर विद्रोहियों का कब्जा रहा।

egyanarchive

प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1. वीर कुंवर सिंह के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर-

वीर कुंवर सिंह के व्यक्तित्व की निम्न विशेषताएँ हमें प्रभावित करती हैं-

1. **वीर सेनानी-** कुँवर सिंह महान वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई।
2. **स्वाभिमानी-** इन्होंने वीरता के साथ-साथ स्वाभिमानी की भी मिसाल दी। जब वे शिवराजपुर से गंगा पार करते हुए जा रहे थे तो डगलस की गोली का निशाना बन गए। उनके हाथ पर गोली लगी। उस समय वे न तो वहाँ से भागे और न ही उपचार की चिंता की, बल्कि हाथ ही काटकर गंगा में बहा दिया।

3. **उदार स्वभाव-** वे अत्यधिक उदार स्वभाव के थे। किसी प्रकार का कोई जातिगत भेदभाव उनमें न था। यहाँ तक कि उनकी सेना में इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन मुसलमान होते हुए भी उच्च पदों पर आसीन थे। वे हिंदू-मुसलमान दोनों के त्योहार सबके साथ मिलकर मनाते थे।
4. **दृढ़निश्चयी-** उन्होंने अपना जीवन देश की रक्षा हेतु समर्पित किया। जीवन के अंतिम पलों में इतने वृद्ध हो जाने पर भी सदैव युद्ध हेतु तत्पर रहते थे। यहाँ तक कि मरने से तीन दिन पूर्व ही उन्होंने जगदीशपुर में विजय पताका फहराई।।
5. **समाज सेवक-** एक वीर सिपाही के साथ-साथ वे समाज सेवक भी थे। उन्होंने कई पाठशालाओं, कुओं व तालाबों का निर्माण करवाया। वे निर्धनों की सदा सहायता करते थे।
6. **साहसी-** कुँवर सिंह का साहस अतुलनीय है। 13 अगस्त, 1857 को जब कुँवर सिंह की सेना जगदीशपुर में अंग्रेजों से परास्त हो गई तो उन्होंने साहस न छोड़ा, बल्कि भावी संग्राम की योजना बनाने लगे। 23 अप्रैल, 1858 को आजमगढ़ में अंग्रेजों को हराते हुए उन्होंने जगदीशपुर में स्वाधीनता की विजय पताका फहरा कर ही दम लिया।

प्रश्न 2. कुंवर सिंह को बचपन में किन कामों में मज़ा आता था? क्या उन्हें उन कामों से स्वतंत्रता सेनानी बनने में कुछ मदद मिली?

उत्तर-

वीर कुंवर सिंह को बचपन में पढ़ाई-लिखाई से ज्यादा घुड़सवारी करने, तलवारबाजी करने तथा कुश्ती लड़ने में मजा आता था। जब बड़े होकर स्वतंत्रता सेनानी बने तो इन कार्यों से उन्हें बहुत सहायता मिली। तलवार चलाने व तेज़ घुड़सवारी से तो वे कदम-कदम पर अंग्रेजों को मात देते रहे।

egyanarchive

प्रश्न 3. सांप्रदायिक सद्भाव में कुँवर सिंह की गहरी आस्था थी। पाठ के आधार पर कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर-

कुँवर सिंह की सांप्रदायिक सद्भाव में गहरी आस्था थी। उनकी सेना में मुसलमान भी उच्च पदों पर थे। इब्राहीम खाँ तथा किफ़ायत हुसैन उनकी सेना में उच्च पदों पर आसीन थे। उनके यहाँ हिंदुओं तथा मुसलमानों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करते थे। उनके यहाँ दोनों धर्मों के त्योहार एक साथ मनाए जाते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने पाठशालाओं के साथ मकतबों का भी निर्माण कराया।

प्रश्न 4. पाठ के किन प्रसंगों से आपको पता चलता है कि कुंवर सिंह साहसी, उदार एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे?

उत्तर-

1. **उदार स्वभाव-** उनमें किसी प्रकार का कोई जातिगत भेदभाव न था। यहाँ तक कि उनकी सेना में इब्राहिम खाँ और किफायत हुसैन मुसलमान होते हुए भी उच्च पदों पर आसीन थे। वे हिंदू-मुसलमान दोनों के त्योहार सबके साथ मिलकर मनाते थे।
2. **साहसी-** कुँवर सिंह का साहस अतुलनीय है। 13 अगस्त, 1857 को जब कुँवर सिंह की सेना जगदीशपुर में अंग्रेजों से परास्त हो गई तो उन्होंने साहस न छोड़ा, बल्कि भावी संग्राम की योजना बनाने लगे। 23 अप्रैल, 1858 को आजमगढ़ में अंग्रेजों को हराते हुए उन्होंने जगदीशपुर में स्वाधीनता की विजय पताका फहरा कर ही दम लिया।

प्रश्न 5. आमतौर पर मेले मनोरंजन, खरीद-फरोख्त एवं मेलजोल के लिए होते हैं। वीर कुंवर सिंह ने मेले का उपयोग किस रूप में किया?

उत्तर-

प्रायः मेले का उपयोग मनोरंजन, खरीद-फरोख्त तथा मेलजोल के लिए किया जाता है, लेकिन कुँवर सिंह ने सोनपुर के मेले का उपयोग अंग्रेजों के विरुद्ध स्वाधीनता संग्राम की योजना बनाने के लिए व अपनी बैठकों के लिए किया। यहाँ लोग गुप्त रूप से इकट्ठे होकर क्रांति के बारे में योजनाएँ बनाते थे। सोनपुर में एशिया का सबसे बड़ा पशु मेला लगता है। इसका आयोजन कार्तिक पूर्णिमा पर होता है। इस मेले में हाथियों की खरीद-बिक्री होती है। इस मेले की आड़ में कुँवर सिंह अंग्रेजों को चकमा देने में सफल रहे।

निबंध से आगे

प्रश्न 1. सन् 1857 के आंदोलन में भाग लेने वाले किन्हीं चार सेनानियों पर दो-दो वाक्य लिखिए।

उत्तर-

1- **रानी लक्ष्मीबाई –** झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई स्वाधीनता संग्राम की प्रथम महिला थीं, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी भूमिका निभाई थी। वह स्वाभिमानिनी, कुशल योद्धा, कुशल प्रशासिका, विदुषी, भागवत गीता के सिद्धांतों को मानने वाली थी। अंग्रेजों से अंत तक लड़ती रही। लड़ते-लड़ते 23 वर्ष की अल्पायु में वीरगति को प्राप्त हो गई।

2- **मंगल पांडे –** अंग्रेजी सेना का सिपाही मंगल पांडे कट्टर धर्मावलंबी था। कारतूस में गाय और सुअर की खबर फैलने के बाद उन्होंने विद्रोह की शुरुआत की थी।

3 - **तात्या टोपे –** तात्या टोपे का मूल नाम रामचंद्र पांडुरंग था। ये झाँसी की रानी की सेना में सेनापति थे। इन्हें 18 अप्रैल, 1859 को फाँसी पर लटका दिया गया था।

4 - **बहादुर शाह ज़फ़र –** मई, 1857 में विद्रोहियों ने दिल्ली पर कब्जा करके बहादुर शाह दुवितीय को पुनः भारत का सम्राट घोषित कर दिया। 82 वर्षीय बहादुर शाह ने बख्त खाँ के सहयोग से विद्रोह का नेतृत्व किया था। उन्हें अपना शेष जीवन रंगून के जेल में बिताना पड़ा।

egyanarchive

प्रश्न 2. सन् 1857 के क्रांतिकारियों से संबंधित गीत विभिन्न भाषाओं और बोलियों में गाए जाते हैं। ऐसे कुछ गीतों को संकलित कीजिए।

उत्तर

ओ मेरा रंग दे बसंती चोला, मेरा रंग दे बसंती चोला
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला, ओय रंग बेसमान है।
बसंती चोला माई रंग दे बसंती चोला …………
दम निकले इस देश की खातिर बस इतना अरमान है
एकबार इस राह में मरना सौ जन्मों के समान है।
देख के वीरों की कुरबानी अपना दिल भी बोला
जिस चोले को पहन शिवाजी खेले अपनी जान पे
जिसे पहन झाँसी की रानी मिट गई अपनी आन पे
आज उसी को पहन के निकला पहन के निकला
आज उसी को पहन के निकला, हम मरदों को टोला
मेरा रंग दे बसंती चोला
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला मेरा रंग दे
ओ मेरा रंग दे बसंती चोला ओय रंग दे
बसंती चोला माई रंग दे बसंती चोला
माई रंग दे …………………..

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. वीर-कुँवर सिंह का पढ़ने के साथ-साथ कुश्ती और घुड़सवारी में अधिक मन लगता था। आपको पढ़ने के अलावा और किन-किन गतिविधियों या कामों में खूब मज़ा आता है? लिखिए?

उत्तर-

हमें पढ़ने के साथ-साथ क्रिकेट खेलने, पार्क में घू, सिनेमा देखने एवं दोस्तों के साथ गप्पे मारना अच्छा लगता है। इसके अलावा बाइक की सवारी करना अच्छा लगता है।

प्रश्न 2. सन् 1857 में अगर आप 12 वर्ष के होते तो क्या करते? कल्पना करके लिखिए।

उत्तर

1857 में यदि मैं 12 वर्ष का होता तो अवश्य वीर सेनानियों के कार्यों से प्रभावित होता। मैं भी तलवार चलाना व घुड़सवारी आदि सीखता ताकि बड़ा होकर सैनिक बन पाता। लोगों में देश-प्रेम की भावना जागृत करने का भी प्रयास करता।

प्रश्न 3. अनुमान लगाइए, स्वाधीनता की योजना बनाने के लिए सोनपुर के मेले को क्यों चुना गया होगा?

उत्तर-

स्वाधीनता की योजना बनाने के लिए सोनपुर के मेले को इसलिए चुना गया होगा कि सोनपुर का मेला एशिया का सबसे बड़ा मेला है। इसमें काफ़ी भीड़ होती है तथा तरह-तरह के हाथियों की खरीद-बिक्री की जाती है। इस मेले में इतनी भीड़ होती थी कि यदि स्वतंत्रता सेनानी यहाँ कोई योजना बनाने के लिए इकट्ठे हो जाएँ तो अंग्रेजी सरकार को कभी शक नहीं हो सकता था।

भाषा की बात

आप जानते हैं कि किसी शब्द को बहुवचन में प्रयोग करने पर उसकी वर्तनी में बदलाव आता है, जैसे- सेनानी एक व्यक्ति के लिए प्रयोग करते हैं और सेनानियों एक से अधिक के लिए। सेनानी शब्द की वर्तनी में बदलाव यह हुआ है कि अंत के 'वर्ण' 'नी' की मात्रा दीर्घ ी (ई) से ह्रस्व ि (इ) हो गई है। ऐसे शब्दों को, जिसके अंत में दीर्घ ईकार होता है, बहुवचन बनाने पर वह इकार हो जाता है, यदि शब्द के अंत में ह्रस्व इकार होता है, तो उसमें परिवर्तन नहीं होता; जैसे- दृष्टि से दृष्टियों।

• नीचे दिए गए शब्दों का वचन बदलिए

नीति ………………. जिम्मेदारियों ……………. सलामी ………………..

स्थिति ………………. स्वाभिमानियों ………… गोली ……………….

उत्तर-

नीति	–	नीतियों
जिम्मेदारियों	–	जिम्मेदारी
सलामी	–	सलामियों
स्थिति	–	स्थितियों
स्वाभिमानी	–	स्वाभिमानियों
गोली	–	गोलियाँ

egyanarchive